आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 313 ARYA SABHA MAURITIUS *21st July to 31st July 2015*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म् इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा वस्तेनऽईशत माघशँसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बहीर्यजमानस्य पशून्पाहि ।।

Om! Ishe tvorjje twā vāyayastha devo vaha
Savitā prārpayatu shreshtatha māya karmana,
āpyāya-dwamaghniyā indrāya bhāgam prajāvatir-namivā,
āyakshamā mā vaha stena ishat māghasham
So dhruvāsmin gopataw syāt bahavirjaymānasya pushoun pāhi.

Yajur Veda 1/1

Glossaire / Shadārtha :

Ishe Tva : Pour avoir la nourriture et autres éléments indispensables pour préserver la vie, **Tworjje**: Pour avoir la force, l'énergie, la vitalité, **He manushya** : O être humain !, **Vāyavastha :** Tu dois être actif, dynamique et fort comme le vent, **Savitā devāha / Devo vaha savitā :** Le seigneur, notre créateur, nous accorde le bonheur, la prospérité et le confort dont nous avons besoin dans notre vie, et nous transmet aussi toute la connaissance, **Prārpayatu :** Que l'on soit en communion parfaite avec le Seigneur qui nous donne la bonne inspiration, **Shreshthatamāya Karmane :** pour accomplir les actions nobles et sacrées telles que le Yajna et autres bonnes actions, **Indra** – Dieu, **Indrāya bhāgam :** Tu dois consacrer un peu de ton temps à la dévotion, à l'élévation et à la Purification de l'âme, **Apyāyadhwam :** Que nous ayons en abondance les ressources et autres matériels pour accomplir le Yajna et pour vivre, **Aghniyā :** Celui qui élève et protège les vaches aussi bien que leurs veaux et autres animaux qui sont utiles et qui ne sont ni agressifs ni dangereux, **Prajāvati :** Que nous ayons des enfants / des progénitures, **Anmivā ayakshamāha :** qui sont en bonne santé et qui ne souffrent pas de maladies telles que la tuberculose, **Vaha :** Que parmi nous ou dans notre lignée il n'y ait pas de, **Stena :** voleurs, criminels, bandits ou escrocs, **Aghashamsahā :** ou autres malfaiteurs, **Ma ishat :** Que de telles personnes ne deviennent jamais les protecteurs ou les maitres de nos animaux, **Bahaviha dhruvaha :** Qu'il y ait des vaches qui vivent longtemps, **Asmin gopataw :** Chez les maitres paisibles et non-agressifs qui les élèvent et les protègent, **Syat :** Que ces animaux soient toujours en sécurité, **Yajmanasya pashoun pahi :** Que Dieu bénisse et protège toujours les vaches, les veaux, les chevaux, et autres animaux utiles, les enfants, les familles et les biens de tous les fidèles, de sorte qu'ils puissent accomplir le Yajna régulièrement, qu'ils ne soient pas victimes des malfaiteurs et qu'ils soient toujours à l'abri de tous les malheurs.

Interpretation / Anushilan :

*C'est le premier verset (mantra) du premier chapitre du **Yajur Veda** dont le thème principal est **'Action'** ou **Karma** en Hindi. Sachons que chaque Veda a un thème spécifique comme suit:*
***Le Rig Veda** a pour thème principal la connaissance / le savoir ou **'gyān'** en Hindi.*
***Le Sama Veda : La Dévotion** - les prières. Le Yajna, les rites - **Upāsna** en Hindi.*
***L'Atharva Veda : La Science** ou **'Vigyān'** en Hindi.*

On peut dire que ce verset introduit le thème principal du Yajur Veda lorsque l'on prend connaissance du message fort qu'il nous transmet en nous donnant en même temps un avant-goût des actions que l'on doit entreprendre pour avoir une vie sublime.

L'homme, en tant que chef de famille, doit gagner sa vie décemment. Il doit pouvoir accomplir ses devoirs très consciencieusement envers son entourage, le société, le pays aussi bien qu'envers Dieu, et assumer la responsabilité de la protection de sa famille et pourvoir à tous leurs besoins.

Mais pour accomplir toutes ces tâches ardues il a besoin de la nourriture, de la force physique, de l'énergie ou la vitalité, d'une très bonne santé, des ressources financières et matérielles et aussi d'une détermination ferme.

Tout ceci n'est possible de sa part que par le travail dur, honnête et sans répit. Il ne doit jamais se fier à une autre personne pour subvenir à ses besoins. Il doit toujours dépendre de lui-même et de son dur labeur.

Dans ce contexte le Seigneur, Notre Créateur, nous conseille d'être tout le temps actif, dynamique et aussi fort que le vent, et d'acquérir l'éducation, la connaissance, les attitudes positives, l'humanisme, la magnanimité, le savoir-vivre, la spiritualité et autres qualités divines.

Il nous inspire aussi à entreprendre des actions nobles louables et bénéfiques, qui nous mènent vers la réussite, la gloire, la prospérité, le renom, et à l'acquisition de richesse par des moyens honnêtes. Il nous demande aussi d'éviter des actes répréhensibles et des péchés.

Cependant il ne nous faut pas oublier notre devoir envers Dieu. Il nous faut consacrer une partie de notre temps à la dévotion pour l'élévation et la purification de notre âme. Pour avoir une vie accomplie nous souhaitons que, par la grâce du Seigneur, nous ayons dans notre lignée des progénitures (enfants) qui feront honneur à notre famille. Nous voudrions aussi avoir des animaux qui nous soient utiles et qui soient en bonne santé.

Nous souhaitions encore qu'il n'y ait pas de voleurs et des malfaiteurs parmi nous, que nous ne soyons pas atteints des maladies incurables et que nous ne soyons pas victimes des vols ou des calamités.

Que Dieu protège tous les fidèles qui pratique le yajna (la dévotion et toutes les bonnes actions) ainsi que les animaux utiles qu'ils élèvent.

N. Ghoorah

सम्पादकीय

आर्यसमाज का प्रमुख पर्व

श्रावणी उपाकर्म महोत्सव आर्यसमाज के प्रमुख पर्वों में से एक महान् पर्व है। इस धार्मिक महोत्सव का सम्बन्ध वेदों के पठन-पाठन तथा यज्ञ-महायज्ञों के अनुष्ठान से है। हम समस्त आर्य परिवार बड़े ही भक्तिभाव से इस पर्व के अन्तर्गत यज्ञ-महायज्ञों में सम्मिलित होते हैं। इस पर्व के उपलक्ष्य में धार्मिक गतिविधियों से भक्ति का भव्य वातावरण छा जाता है, जिससे हिन्दू समुदाय अति प्रभावित हो उठते हैं।

श्रावण मास में जिस दिन वेद-परायण आरम्भ होता है, उसको उपाकर्म कहते हैं। श्रावणी उपाकर्म को 'ऋषि तर्पण' भी कहा जाता है। ऋषि तर्पण का तात्पर्य है – जो कार्य ऋषि-महा ऋषियों ने आरम्भ किया था, उसे आगे बढ़ाते जाना, अर्थात् वेदों का श्रवण, पठन-पाठन तथा धार्मिक गतिविधियों को वैदिक पर्व पद्धति के आधार पर आयोजन करते जाना।

श्रावण मास को वेद मास भी कहा जाता है, इस महीने के दौरान हम समस्त आर्य परिवार अपने शाखा समाजों में वेदाध्ययन पर विशेष ध्यान देते हैं। हमारे शिक्षक और विद्वान् गण वेदों के स्वाध्याय पर बल देते हैं। हमारे पुरोहित-पुरोहिताएँ वेद मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण से श्रोताओं के मुग्ध कर देते हैं। वेदों की सत्य विद्याएँ प्रदान करके भूले-भटके इन्सानों के ज्ञान-चक्षु खोल देते हैं। हमारे युवक-युवतियों को वेद-विद्याएँ ग्रहण करने के लिए प्रभावित कर देते हैं। ईश्वरीय-वाणी वेद का प्रचार-प्रसार श्रावणी महोत्सव के अन्तर्गत हमारे देश में प्रति वर्ष अच्छे प्रबन्ध के साथ होता है।

वेद विद्या का प्रचार-प्रसार करने के लिए आर्य सभा वर्षों से विशेष आयोजन करती आ रही है। विशेष कर श्रावण मास में तो इसका भव्य आयोजन किया जाता है। हम यहाँ जुलाई-अगस्त महीनों में बड़ी उत्सुकता के साथ वेदाध्ययन करते हैं। वैदिक ज्ञान प्राप्त करके सात्विक विचार, शुद्धाचरण और सुकर्म करते हैं और वेदों के स्वाध्याय से अपने, मन, बुद्धि और आत्मा पवित्र करते हैं।

आधुनिक काल में भौतिक भोग के पीछे हम व्याकुल, असंतोष और तनावपूर्ण दिखते हैं। हमारा मन चंचल है, बुद्धि अस्थिर है। हम अपने चंचल मन और अस्थिर बुद्धि द्वारा कुकर्म की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। इसी कारण हमारे जीवन में अशांति और बेचैनी है, किसी को चैन नहीं । वेद-ज्योति के अभाव में इन्सान अति चिंतित, व्याकुल और दुखित हैं। ऐसी परिस्थिति में बड़ी पवित्र भावना के साथ इस प्रमुख पर्व का भव्य आयोजन करना हमारा परम कर्तव्य है।

ईश्वर भक्ति, पूजा-पाठ, वेदाध्ययन एवं धार्मिक कृत्य करने से हमारी आत्मा आनंदित होती है। इसी कारण आर्य सभा का प्रमुख उद्देश्य यह है – वेदों का पठन-पाठन करना, वेद-मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण करना, वैदिक विद्याओं का प्रसार करना और वेदों के आधार पर सामाजिक सुधार एवं मानवीय उद्धार करना।

आर्य सभा एवं वेद प्रचार समिति की ओर से तथा समस्त शाखा समाजों के पूरे सहयोग से इस वर्ष हम पहली अगस्त को श्रावणी महोत्सव का शुभारम्भ करने जा रहे हैं। हमारा यह निवेदन है कि आप पूर्व ही से सुनियोजित ढंग से इस महान् पर्व की तैयारी करें। हमारे पुरोहित-पुरोहिताओं एवं विद्वानों से आग्रह है कि इस पर्व की महानता बढ़ाने में पूरा सहयोग दें। सभी आर्य बन्धु एक आदर्श आर्य का प्रमाण देकर श्रावणी महोत्सव का महत्व अधिक बढ़ाएँ ।

हमारी यही कामना है कि आप सभी भाई-बहनों के पूरे सहयोग से इस साल भी देश भर में भक्ति का वातावरण छा जाए और वैदिक ध्वनि से आकाश गूँज उठे ।

आर्य नाद – *वेद की ज्योति घर-घर जलती रहे*
ओ३म् नाम की महिमा देश में बढ़ती रहे ।

बालचन्द तानाकूर

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

भजन प्रतियोगिता

भजन भगवान के लिए भक्त गाता है। भजन गाना भक्त के लिए स्वाभाविक होता है। परमेश्वर ने जब सृष्टि की रचना की तो चार वेद दिये। ऋग्वेद अग्नि ऋषि के माध्यम से अवतरित हुआ। यजुर्वेद वायु ऋषि द्वारा, आदित्य द्वारा सामवेद और अंगिरा ऋषि के हृदय में उपजे अथर्वेद। इन चार वेदों में पद्य है और गद्य भी। सामवेद गान का वेद है। उसी गान से भक्त उपासना कर उपास्य देव का सान्निध्य प्राप्त करता है।

वही गान मनोरंजन का भी साधन है। उसी गान से आत्मा प्रफुल्लित हो जाता है। जैसे सोम से बनते-बनते सूरा बन जाता है। उसी प्रकार गान से गीत बना और गिरते-गिरते 'सेगा' का रूप धारण कर लिया। भारत से जब हमारे पूर्वज अपने माँ-बाप, भाई-बहन और पास-पड़ोस के लोगों से दूर मॉरीशस आए थे तो उनकी याद आती थी तो विरह होता था। उसी को बिरहा कहते थे, विरह का बिगड़ा रूप 'बिरहा'।

आर्यसमाज के जन्मकाल से ही भजन को प्रचार कार्य का माध्यम बनाया गया। एक तरफ़ प्रचार कार्य के लिए भाषण दिया जाता है, भजन के माध्यम से भी वही काम लिया जाता जो कलम से लिया जाता है। मॉरीशस में भी भजन गाने की परिपाटी पुरानी है।

इस समय आर्य सभा मॉरीशस के तत्वावधान में संगीत समिति ने हरेक ज़िले में एक केन्द्रिय स्थान पर एक भजन प्रतियोगिता की व्यवस्था की है। पाम्प्लेमूस-रिव्येर जू राम्पार में विगत सप्ताह हो गए। गत सप्ताह एक ही मौके पर ग्राँ पोर और सावान में भी आयोजन हुआ था। गत रविवार दि० १२.०७.१५ को दोपहर २.३० बजे ओलिये आर्य मन्दिर में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुई। सभी स्थानों में लोग अच्छी संख्या में उपस्थिति दे रहे हैं।

अब शेष मोका, फ्लाक और पोर्ट लुईस में आयोजित हो रही थी। इन सब प्रतियोगिताओं से लोग प्रभावित हो रहे हैं। इसमें नौजवानों का पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है। एक भी मण्डली उपस्थित नहीं होती है जिसमें हमारी बहनों का सहयोग प्राप्त नहीं होता ।

एक नई संस्था बनी

पिछले दिनों आर्य सभा ने एक नई संस्था स्थापित की जिसका नाम रखा गया है, 'संग्राम सेवा सदन आसोसियेसन' (Sangram Seva Sadan Association) जिसका लघु रूप होगा एस.एस.एस.ए. । इसकी बैठक वहीं लगेगी जहाँ सें पोल में संग्राम सेवा सदन है। उसका गठन इस प्रकार हुआ प्रधान १. डा० रुद्रसेन उपप्रधान एस. प्रीतम मंत्री राजीव निऊर और अन्य लोग सदस्य हैं ।

इस सामाजिक संस्था का मुख्य उद्देश्य है –

ड्रग के सेवन करने वालों को सहायता पहुँचाना और उनको जीवन की मुख्य धारा में वापस लाना। इसको चलाने के लिए National Empowerment Foundation की ओर से आर्थिक सहायता मिलेगी।

पिछले शुक्रवार दि० १० जुलाई २०१५ को ३.१५ से ४.३० तक पहला समारोह नेहरू नगर में आयोजित किया गया था। चुनाव क्षेत्र में नं० ९ के मंत्री राजेश्वर दयाल, पृथ्वी राजसिंह रूपण और पी.पी.एस. राजकुमार रामपताब। तीनों ने बारी-बारी भाषण दिये जिनके दौरान आर्यसभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आर्य सभा के प्रधान डा० उदयनारायण गंगू, नयी संस्था के प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर और संपर्क अधिकारी राज दर्शण आर्य सभा द्वारा की जा रही सेवा में उसे जोड़ते हुए कहा कि ऐसा करके हम ज़रूरत मंद लोगों की सेवा करते हैं । सेवा ही हमारा धर्म है ।

In the context of Shravani – Ved Mās

S. Peerthum

This year, according to lunar calendar, the month of Shravani begins on Saturday 1st August 2015 and will end on 29th of the same month and we will conclude the month which is called Shravani Upākarma. But we, in Mauritius, in the beginning we have named it 'Upākarma'.

This year we are marking the 50th anniversary of Shravani which was celebrated by Swami Akhilanand in Trois Boutiques Arya Samaj Mandir. Only recently we have begun to call it 'Ved Mās'.

During the whole month of 'Ved Mās', we will talk about the Vedas, Swami Dayanand, and his writings such as Rig Vedadi Bhashya Bhumika and Ved Bhashya.

I am reproducing, below a few lines from Swami Satyaprakash Saraswati's Sam Veda introduction.

Sura is a beverage of reality to be enjoyed by wicked drunkards and demons. Soma is conceptual beverage, imaginary in the sense that it cannot be carried in bottles; it is enjoyed by divine people; it is the sole possession of gods. Sura is manufactured in a distillery from malt, molasses or grapes mixed with condiments. Soma and Sura, both are exhilarating – the latter is intoxicating, the former is strength – giving. Sura dupes the senses and stupefies the intellect; Soma, on the contrary makes you sensible par excellence; it evokes and involves wisdom. Sura leads to vice and untruth, but soma takes you to virtue and truth. Sura is the confusion of utter darkness. Whiles Soma leads you to enlightenment. Asuras ran to take the entire possession of Sura while gods, the younger, had to remain satisfied with Soma. The Asuras sought satisfaction in the matters of to-day while Soma sharers looked to the satisfaction of distant future of a remote tomorrow. Asuras, the sharers of Sura, became victims of a perpetual hell. The Gods, sharers of soma attained immortality after death and hence demons were afraid of death while Gods courted death with pleasure.

Soma and Sura

Soma in no way is to be confused with the intoxicating liquor (alcohol and wines). The Satapatha Brahamana clearly shows the difference between Soma and Sura.

सत्यं वै श्री ज्योतिं सोमः,
अनृतं पाष्मा तमः सुरैते।

पाम्प्लेमूस आर्य ज़िला परिषद् में सत्यार्थप्रकाश की १४१ वीं जयन्ती

पं० मानिकचन्द बुद्धु

पाम्प्लेमूस आर्य ज़िला परिषद् ने आर्य सभा द्वारा घोषित सत्यार्थप्रकाश मास (जून २०१५) में पूरी व्यवस्था के साथ दस (१०) शाखा-समाजों तथा घर-घर दस (१०) परिवारों में यज्ञ, संध्या, भजन-किर्तन, प्रवचन तथा सन्देश आदि दिया। लगभग सभी शाखा-समाजों में तथा घर-परिवारों में सब को भोजन से भी सत्कार किया।

त्रियोले आर्यसमाज शाखा न० ६० के नन्दलाल भवन में जून मास के क्रमशः चारों रविवारों को सत्यार्थप्रकाश जयन्ती समारोह मनाया गया। मोर्सेल्माँ सेंतान्द्रे आर्यसमाज न० ७/१३६ हर साल की तरह अच्छी संख्या में पूरे आयोजन के साथ सत्यार्थप्रकाश जयन्ती महोत्सव मनाया गया। इस समाज में सत्यार्थप्रकाश पर दो विशेष कार्यक्रम हुए। आर्यसभा के वरिष्ठ पुरोहित, उपवरिष्ठ पं० मधु जिराखन जी, तथा पं० विद्यानी मुखराम द्वारा यज्ञ, संध्या तथा प्रवचन और सन्देश हुए। पं० माणिकचन्द बुद्धु द्वारा दोनों अवसरों पर सत्यार्थप्रकाश पर गंभीर प्रवचन हुआ। समाज के कलाकारों द्वारा तथा महिला समाज की सदस्याओं द्वारा सुन्दर भजन हुए।

संप्रति इस समाज के प्रेरणा-स्रोत डा० जगेसर जी हैं। आप भारत में मोरिशस सरकार के उच्चायुक्त रह चुके हैं । आपने मोर्सेल्माँ आर्यसमाज को चारों वेदों का एक पूरा सेट सथा संगीत वाद्य हरमोनियम और तबले दान में दे सुके हैं। इसके अतिरिक्त आप समाज के प्रत्येक कार्यक्रम में उपस्थित होकर हर प्रकार से सहयोग करते हैं । मोर्सेलमाँ समाज तीन बुतिक त्रिओले आर्यसमाज की भाँति अपने रसोईघर का निर्माण कर सबको भोजन से सत्कार करने सुन्दर व्यवस्था कर ली है।

ग्राँ प्वेंत पिमाँ के यज्ञ परिवार (आर्यसमाज शाखा न. २४६ और आर्य महिला समाज न० २६५) द्वारा सत्यार्थप्रकाश पर छः कार्यक्रमों का सफल आयोजन यज्ञ, संध्या, भजन-किर्तन, प्रवचन, सन्देश तथा भोजन के द्वारा किया। प्रत्येक कार्यक्रम में लगभग औसतन १००-१५० लोगों की उपस्थिति रही। पं० माणिकचन्द जी के निर्देश में समाज की दोनों पंडिताओं द्वारा पूरी तैयारी के साथ सत्यार्थप्रकाश के समु० १,२,३,४,७,९ तथा समु० १० पर ज्ञानवर्धक प्रवचन हुए। हमारे प्रसिद्ध गायक श्री सतीश प्रभु जी ने अपने भजनों से सबका विशेष मनोरंजन किया।

आर्य ज़िला परिषद् की अन्य शाखा-समाजों में यथा सामर्थ्य तथा योग्तानुसार सत्यार्थप्रकाश जयन्ती मनायी। परिषद् के पुरोहितों तथा पुरोहिताओं का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

इस साल के सत्यार्थप्रकाश जयन्ती महोत्सव के आयोजन परिषद् के नवाध्यक्ष डा० जयचन्द लालबिहारी जी की प्रेरणा तथा सहयोग भी प्राप्त हुआ। उन्होंने कई शाखा-समाजों में उपस्थित होकर अपने सन्देशों सब उत्साह बढ़ाया।

सत्यार्थप्रकाश जयन्ती महोत्सव के कार्यक्रमों की अंतिम कड़ी रही फों जु साक आर्य शाखा-समाज न० ८ में । यहाँ आर्य युवक संघ ने अपनी तीसरी वर्षगाँठ के शुभावसर पर बड़ी धूम-धाम से अपनी वर्षगाँठ और सत्यार्थप्रकाश जयन्ती एक साथ मनायी। फों जु साक आर्य समाज का भवन निमन्त्रित लोगों से खचाखच भर गया था। विशेष उपस्थिति आर्यसभा के प्रधान डा० उदय नारायण गंगू, महामन्त्री श्री हरिदेव रामधनी, उपमन्त्री तथा पाम्प्लेमुस आर्य परिषद् के प्रधान डा० जयचन्द लालबिहारी, मौरिशस आर्य युवा संघ के प्रधान श्री धर्मवीर गंगू तथा आर्य सभा के वरिष्ट पुरोहित पं० श्याम दयबू जी की रही। उपरोक्त सभी नेताओं ने बारी-बारी अपने अपने सन्देश दिये ।

युवासंघ के इस कार्यक्रम की विशेष शोभा बढ़ाई हमारे प्रसिद्ध गायक श्री मोहरलाल चमन जी ने । आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती के कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पर एवं उनके महान् उपकारों पर अनेक मनभावी भजन सुमधुरसंगीत वादन के साथ किया। उपस्थित जनता ने तालियों की गड़गड़ाहट से उन्हें बधाई दी।

आर्यसभा के वरिष्ठ पुरोहित पं० माणिकचन्द द्वारा यज्ञ किया गया और कार्यक्रमों का सफल संचालन किया युवकसंघ की प्रतिभा सम्पन्न युवा प्रधाना कुमारी दीया समजीतन ने।

अन्त में सबका मिठाई और जलपान से सत्कार किया।

सत्यार्थप्रकाश मास हमारे पास

सोनालाल नेमधारी, आर्य भूषण

सत्यार्थप्रकाश मास का आयोजन हमारे समाज में भी हुआ। पुरुष और महिला समाज के सहयोग से लगभग दो घण्टे का कार्यक्रम था। यज्ञ के पश्चात् पंडित जी द्वारा वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम पर चर्चा हुई। पंडिता श्रीमती धनवन्ती रामचरण जी का आगमन हुआ था। उनका आशीर्वाद मिला, शुभकामनाएँ मिलीं। उनका कहना था, कारोलिन आर्य समाज और महिला समाज इस प्रान्त में जीता-जागता समाज है। सभी व्रत और त्योहार धूमधाम से मनाते हैं। एक जागरूक समाज है। कभी पीछे नहीं हटते हैं। सभा का आदेश शिरोधार्य होता है। समाज कर्मचारियों और सदस्यों को धन्यवाद भी दिया। जानकर खुशी हुई कि प्रान्त में हमारा समाज श्रेष्ठ समाज है। श्रेष्ठता बनाये रखने के लिए पीछे मुड़कर देखना ही पड़ता है। सन् पचास के लगभग एक सदस्य की ज़मीन पर बैठक थी। गोबर-माटी से लीपी पोती। वहीं सत्संग रात्रि में होता था। हरमोनियम और तबला लेकर आते थे। भजन गाते थे। हवन करते थे। सत्संग होता था। वहाँ से कहीं और जाना पड़ा। स्टेट में एक पूर्व प्राथमिक पाठशाला में बैठक लगती थी। वहाँ से भी खिसकना पड़ा। एक सज्जन के बरामदे में हवन-यज्ञ होता था। समाज ही के सदस्य वे सड़क किनारे की ज़मीन का टुकड़ा सभा के नाम पर दान कर दिया । तीन की बैठक बनायी गयी। ८० तक सदस्य थे। आगे चलकर पक्की इमारत बनायी गयी। आरम्भ से ही बैठक में सायंकालिक पाठशाला चलती थी। आज भी बराबर चलती है। कर्मठ सदस्यों का नाम न लेना अपमान होगा। ज़मीन मधु सरदार, बैठक निमित्त ज़मीन दान सुग्रीम जी मणिलाल गायक सहदेव जी, देवन ताहाकुल, रघुनाथ लछुमन और रामशरण नेमधारी जी। उस समय से आज तक साथ चल रही है। कभी-कभी लड़खड़ा जाती है पर रुकती नहीं। सदस्यों की संख्या कम है पर काम बराबर चलता है ज़्यादातर लोग साठ से ऊपर के हैं। गाँव का हर परिवार के सदस्य आर्यसमाज कारोलिन से हैं। पौराणिक मानसिकता वाली माता-बहनें भी आती हैं। सभी के बच्चे पढ़ने आते हैं। व्रत-त्योहार और आयोजन में सभी आते हैं। समाज के टीके रहने का कारण है लगातार धीमी गति में आगे बढ़ते जा रहे हैं क्योंकि महिला समाज नहीं बनता है। थोड़े में बड़ा काम हो जाता है। करने की कोशिश करते हैं। सभा का आशीर्वाद तो मिलता ही रहता है। उन पूर्वजों का आशीर्वाद और बताये रास्ते पर चल रहे हैं। उनकी बनायी मज़बूत नींव पर ही हम ऊपर बढ़ते जाते हैं। उन्हें भुला नहीं पायेंगे ।

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

NEPAL SOLIDARITY FUND

cont. from last issue

S/N	Name	Amount Received Rs
	Balance b/f	*538,900.00*
1.	Teeluck Family	100
2.	Ramdonee Khushi	100
3.	Jugnauth	100
4.	Babooa C / S. Guness	100
5.	Ramdonee Vashisty	1,000
6.	Ramdonee C	200
7.	Ramdonee Dhunputh	100
8.	Gungadin Noomatee	100
9.	Gungadin Simla	100
10.	Gungadin Priyanka	200
11.	Appadu Vidoushi	125
12.	Seewoogolam Sanjay	100
13.	Seebaluck Diksha	100
14.	Ramdonee Ramdath	100
15.	Gokool Ravin	100
16.	Seeburn Anil	150
17.	Seeburn Rajan	1,000
18.	Seeburn Assook	100
19.	Gokool P	100
20.	Mungur Savitri / Sookar M	125
21.	Etwary Vinod & Family	200
22.	Ramdin / Gyantee Mingra	150
23.	Paro Sumara	150
24.	Leeloo Vinay & Family	100
25.	Ishwarlall Nundloll & Family	100
26.	Ramphul Dhiraj / Siam	100
27.	Bodhoo Vinod	100
28.	Boodee Y.	100
29.	Gopaul Priya	100
30.	Anouradha	125
31.	Ramdonee Vijay & Family	400
32.	Gungadin Komar	100
33.	Ramdonee Juggernauth	1,000
34.	Ramdonee Guruduth	100
35.	Ramdonee Jayshree	500
36.	Ramdonee Veerjanand	500
37.	Teeluck Dhananjay	100
38.	Bhoolooa Vidia	300
39.	Ramdonee Dharmaraj	500
40.	Bois des Amourettes Arya Samaj	2,000
41.	Pta. Goreeba Pratima Devi	200
42.	Mungroo B.	100
43.	Woodun Unesh Kumar	100
44.	Motah R	100
45.	Poorun Garbou	100
46.	Jugessur V.S.	100
47.	Ramduny N.	100
48.	Jugurnauth S.	75
49.	Nundloll C.	100
50.	Nurjundoa V.	100
51.	Ganowree A.T.	100
52.	Mungroo Malika	100
53.	Rugghoo Yudish	100
54.	Ramsurn Raj	100
55.	Baboolun Hemraj	200
56.	Jugun Sweta	100
57.	Beehary Satian	100
58.	Ruggoo Druv	100
59.	Chutur Sweta	100
60.	Gopal B.	100
61.	Geerdharry Girish	200
62.	Ramkhan Devdas	500
63.	Bhageerutty Omduth	100
64.	Lallman Sheela	100
65.	Gopal Vishal	100
66.	Mohun Rugghoo	500
67.	Narain Madhukar	525
68.	Virjanand Arya Samaj, Bissonauth Khemraj	100
69.	Thannoo Cossilah	100
70.	Buroty Sangeeta	100
71.	Boyjonauth Babita	100
72.	Buddoo Radha	100
73.	Choolun Prabha	100
74.	Baichoo Shanta	200
75.	Beekarry Coontee	200
76.	Beekarry Tanuja	100
77.	Luchmun Meera	1,000
78.	Baichoo Khilanand	100
79.	Bilta Anita	100
80.	Trou D'eau Douce,Aukhaj Bhagwantee	140
81.	Aukhez Karoon	100
82.	Nundoo Mila	100
83.	Ramtohul Deepak	125
84.	Seelochund Sanjeev	200
85.	Nowbuth Nitesh	100
86.	Ramtohul Ranjeet	150
87.	Beerbul Surya	100
88.	Beerbul Preety	100
89.	Beerbul Krisha	100
90.	Beerbul Satyam	100
91.	Beerbul Saheel	100
92.	Dahoo Ajay	200
93.	Munrakhan Vijay	100
94.	Seetohul Rajesh	100
95.	Munrakhan Vyomesh	100
96.	Munrakhan Sanjay	100
97.	Seetohul Anad	100
98.	Bhuntoo Sita	150
99.	Beerbul Prem	100
100.	Beerbul Yandy	100
101.	Beerbul Keyoor	100
102.	Beerbul Tej	100
103.	Beerbul Neel	100
104.	Mohabeer Oonta	200
105.	Beerbul Iswar	100
106.	Angoteea Raja	100
107.	Nawbut Chye	100
108.	Gooriah Devika	150
109.	Munrakhan Sanjeet	150
110.	Approo Seeta	125
111.	Ramtohul Ram	100
112.	Munrakhan Ravindra	100
113.	Trou D'eau Douce, Seedheeyan Sneha	100
114.	Seedheeyan Hema	100
115.	Seedheeyan Moolraz	100
116.	Sundhoo Jaydeo & Family	1,000
117.	Sundhoo Sagar & Family	1,000
118.	Mare la Chaux, Chootun Soobhawatee	200
119.	Seegoolam	100
120.	Rambhujun Santa	100
121.	Rambhujun Prakash	100
122.	Rambhujun Shyam	200
123.	Seegoolam Chandradeo	100
124.	Rambhojun Gianjyoti	100
125.	Rambhojun Danwantee	100
126.	Quatre Cocos AMS, Pradessea Parbhawtee	100
127.	Ramessur Family	100
128.	Meetoo Ajit	100
129.	Darshanee Baorun	250
130.	Mila Hurdoyal/Geeta Hurduyal/Jenna Dayal	100
131.	Jamwa Domah	100
132.	Dass/C Raju/Lutchumama Selloo	100
133.	Arte Chendra/Jinni Bassaya	100
134.	Viki Petiah/SatnaR poliv/Devina Harrodon	100
135.	Seetamah Erapah	100
136.	Pratima Punchem	100
137.	Maya Punchem	100
138.	Rajkumar Haradon/Shanti Harachurn/Dani	100
139.	Naden Seenevassen pillay	100
140.	Naden Chellen/Chellen Mardem/ Coolen Devi/Coolen Devi/Chellen Vallee	85
141.	Kamkam Chinniah	100
142.	Devanand Chinniah	100
143.	Devika Harradan/A.K.K Puncheon	100
144.	Raj Vencentayadoo	25
145.	Rajiv Ghooro	100
146.	J. Ghooro/D Camadoo/Rajiv Sunassee	100
147.	Sita Ghooro	100
148.	Sarvam Nuckheda	200
149.	D Cecello/Rajese Appadu/Rajesh Dinesh/ Didier/G Bissessur	100
150.	Reeteesh	200
151.	Vishal /Rajiv Gura	100
152.	Mala Dajee	200
153.	Kumari Cossar	100
154.	Nashaband	200
155.	Khaviraj C.	50
156.	Jayraz Mahadow Msk	100
157.	Swaraz Pokhun	100
158.	Suren Museliah	100
159.	Premdeo Mohiputlall	100
160.	Sarojini Mohiputhlall	100
161.	Indira Mohesh	300
162.	Gita Mohesh	300
163.	Savitree Pokhun	200
164.	Rakesh C.	100
165.	Choon Domah	200
166.	Lallman Gunga	200
167.	Anand Bagelloo	100
168.	Kishore Goberdhan	350
169.	Thacoor	100
170.	Raj Sumareeah	200
171.	Sumoreeah Swanan Kishore	100
172.	Kamla Sumoreeah/Ashok Bundhun	100
173.	Mundry Neshen/Pravesh B/Pravin Seeyiuh/Geeta	125
174.	M. Gungah	100
175.	Mala Mohith	100
176.	Presilla Apadoo/Pas Calina	100
177.	Clodette/Baboo Apadoo	100
178.	Jayraz Mahada Msk	100
179.	K Seebarrun	200
180.	Jaynarain Golam	200
181.	Premduth Golam	100
182.	Kavita Ramroop	1000
183.	Master Tejas Aditya Gangoo	350
184.	Lekhram Seenauth	100
185.	Ramawtee Seeburrun	300
186.	Narainduth Seeburrun	500
187.	Mahila Arya Samaj	475
188.	Raj Hameemah	200
189.	Gyanduth Jhugroo	100
190.	Moka Arya Samaj (Brnch 298)	500
191.	Iswar Boodhun	100
192.	Pillay K	50
193.	Dr Mohith	500
194.	Vijay Rarmdhuny	200
195.	V. Dewkurrun	100
196.	Vijay Dewkurrun	100
197.	Devanand H.	200
198.	Navesh Ramdhunny	500
199.	Meethoo Viswanath S.	100
200.	Meethoo Darshini	200
201.	Sheela Bhujun	100
202.	Arvind K	525
203.	Avichand K	1225
204.	Devesh Poonoo sobun	100
205.	H. Rawbaran	100
206.	K. Panchoo	200
207.	Prenchand Mohith	100
208.	Arun R.	200
209.	A. Mohith	1500
210.	R Soonath/M Toofany/P Ghoorohoo	100
211.	S Foolman/G	100
212.	S Nankeso	200
213.	S Bhugowan	200
214.	Deerpaul Sobha	500
215.	H. Rawm	100
216.	Rawsurun Pahalad	200
217.	Ramdhau A	200
218.	Etwaree	100
219.	Roopun	200
220.	Maya Mooland/Hoolash	100
221.	Poonoovasee Rajen	200
222.	Amarsing Ramchurn	500
223.	Sassee Mahadev	200
224.	Pt Jeewan Mahadev	200
225.	Vinay Boodoo	100
226.	Mevin Soher/Basantee M/Bela Bissoonath	60
227.	Manoj Pudaruth	100
228.	A Cooshner	100
229.	Loulou Chua	100
230.	Cooshneapa	100
231.	Roshan Groodoyal	100
232.	Sanjeev B.	100
233.	Pharmacie Dagotiere	100
234.	Dhiraj Jhoomuck	100
235.	Cabiduth Ajageer	100
236.	Ramkelawan G/Rajcoomar N.	100
237.	R. Takoojee	100
238.	V Ravjee/Q Teonaa/Deelchand S	100
239.	K Periamen/Goari	100
240.	Kona	100
241.	Mungrah/Sterling/Shakila/Tattoohalloo	100
242.	Ajageer & Sons	100
243.	Syam Ramgolam	100
244.	P Khisto/Dhiraj/D Sarojni/A Ramgoolam	100
245.	S Doomun/L Sohar	100
246.	Ramkelawan & Company	2600
247.	K Domun/Elvine/A Jaganuth	100
248.	L Koonjal	100
249.	Rajen J/D Seeburun	100
250.	D Ramgoolam	200
251.	B Joomuck	100
252.	S Koonj	500
253.	D Rookmoreea	200
254.	Savitree S/P Ramkelawon/R Rajcoomar,E. Ramchurn	120
255.	Narvada Chumun	200
256.	Omdatlee Bara	100
257.	Vishwanee B	100
258.	Mahadeva S/Meera Soraye	100
259.	Mila Ramsaran	100
260.	Poonith Sooknaree	125
261.	Indira Joye	100
262.	Roopchand Ouma	100
263.	Goomanee P	100
264.	Dwaka	100
265.	Babitah Jugroop	100
266.	Tulloo S	100
267.	Nemchand/Phooljaree Seerauz	100
268.	Soodevi Ramdarie	100
269.	Anjanee Moheeputh	1000
270.	Yantee Chummun	100
271.	Prabha Bundoo	500
272.	Deepawlee Chummun	500
273.	Shanti Moheenee	100
274.	A Bhoonderowa/Tulsi Kumaree	100
275.	Rajranee Chummun/S Kubwaroo	100
276.	Seeparsad Satee	100
277.	Amrita Bhoonderowa	100
278.	Baljore	90
279.	Lilata Hoseny	100
280.	Petit Verger Arya Samaj	500
281.	Chandrawtee Auchoybur	500
282.	Aarti Auchoybur	100
283.	Amrita Auchoybur/Arun Sambhoolall	90
284.	Leena Auchoybur	100
285.	Indira Hurloll	100
286.	Shivani Geerdhary/Tina Sookun	100
287.	Aarti Manoruth	100
288.	Amrita Chamroo/Mantee Purbhoo	100
289.	Mita Hurloll/Shelena Jukhoop	100
290.	Sourekha Beehary	100
291.	Vidyawtee Bhantoo/Kumari Bhantoo	100
292.	Indira Koonjbheehary/R Bhantoo/D Meettoa/S Maytaram	95
293.	Hemraz Jukhoop/Ishaan Seetah	100
294.	Siven Coolen	100
295.	Sunilduthsing Kanhye	400
296.	Deo Sharma Mahadu	100
297.	Ishwarlall Bhugowan	100
298.	J Bhiman	100
299.	Bissonduth Puduruth	200
300.	Mahaveer Luchoo	500
301.	J. Soonarane	200
302.	Vijayantimala S.	300
303.	R K Ghoorah	200
304.	J. Kanye	500
305.	M Chutteree/B Chuttoree/Soomaria Soogrim	100
306.	Rambawtee Chuttoree	100
307.	Pta Bumma	100
308.	Mala Kissoon	100
309.	R Teelackdhary/S Zsylayah/M Jagarsingh	100
310.	S Mangar/J Fakera/B Sewak	100
311.	B Goodur/R Kissoon/M Chutooree/l y Goodur	100
312.	Nitesh Jowaheer/Dasnewar Kedam/Papou/Isanlall C.	100
313.	Parmawtee Luchoo	500
314.	S Bullee	200
315.	Maheswar Dewan	500
316.	R Dewan	100
317.	Jatooa	200
318.	S D Bhonoo	100
319.	Devanand Koonjul	100
320.	Lower Dagotier Mahila Samaj	500
321.	Anand Jagarnauth	500
322.	Gangoo Diwasraj	200
323.	Pradeep Gooradoyal	100
324.	Jagdev Maheeputh/Shyam Boodhoo	100
325.	D Boojhawan	200
326.	L Boojhawon	100
327.	V Boojhawon	100
328.	Doolaree Boojhawon	200
329.	Yuvah H	100
330.	M Bhuguloo	200
331.	D Bajnauth	300
332.	Bobby H	100
333.	Kesswarnath	100
334.	Boojhawon	100
335.	Uma H	100
336.	Soomesar Ferai	100
337.	S. Boojhawon	200
338.	J Hurry Deve	100
339.	Vinayak pooja shop/Lelitan Book Shop/ M Vimi/R Bhunjun	100
340.	Sanjeewan	100
341.	K Khoobloll	100
342.	S Keerbah/A Seechurn	100
343.	A Sungkar/G Dessua/K Moolia	75
344.	AMS	300
345.	Pta S. Tauckoory	500
346.	S Tauckoory	200
347.	Ramhi Iswarlallsingh	100
348.	Pta Aryawatee Hinchoo	300
349.	Newrajlall	100
350.	Dhunlawatee Luchmun	100
351.	Devti Luchmun	50
352.	Devanand Ramawtan	100
353.	Akhilanand Prakash Hinchoo	200
354.	Medha Hinchoo	200
	TOTAL Rs	**607,330.00**

D.A.V College (Port Louis) – In Action April - June 2015

Sports Day 2015 – the winners declared

Our annual Sports Day took place on the 30th of March 2015 at Germain Comarmond Stadium Bambous. More than 60% of the school population was present on that day. Four teams: Mars – (Red), Venus – (Blue), Jupiter – (Yellow), Neptune – (Green) were in competition.

Mars came first followed by Neptune, Jupiter and Venus, Best class attendance with 89% was won by I Green and Prevoc 1. Best Mascott was won by Mars and Jupiter. An energetic and dynamic atmosphere prevailed on the stadium.

Inter Colleges 2015

Inter Colleges for Port Louis took place on 4th, 5th and 6th of May 2015 at Germain Comarmond Stadium, Bambous. About 30 athletes took part in the competition and our athletes won 10 medals : Gold – 4, Silver – 4, Bronze – 2, Congrats!

Two of our students, AndonyKrishi and Owen Untah have been qualified to participate in Athletics Competition at National level.

The memorable Hindi Divas and French Day at D.A.V College

The college organised a 'Hindi Divas' and a French Day to mark some of the historical and traditional facets of Hindi and French cultures as well as to commemorate the 50th anniversary of the DAV College.

The history of French throughout ages and its status throughout the world was addressed by the master of ceremony Mrs. Deepchand. Students performed a series of dance and music items and participated in role play, poem recitations and elocuations, all in connection with the Hindi and French Language.

Eminent personalities from the Arya Sabha Mauritius were invited to take part in these two activities among which were Dr. J. Lallbeeharry and Mrs.Ramchurn. They addressed their speech in regards to these two occasions and offered prizes to the winning participants.

PTA - Election of new members

The Parent –Teachers Association (PTA) of the College elected a fresh team for the years 2015-2017. Election is carried out every two years as per the rules of the "registrar of associations". The PTA has a major role to play within an academic organisation, one being to look after the welfare of students and to act as a link between students and parents. The PTA also helps significantly in providing funds to run the activities of the college. The elected members are : President - P. Doonookdharee, Vice-President - S. Deepun, Secretary - K.K Tataree, Assistant Secretary - K. Dulhumsingh, Treasurer - J. Rughoonath, Asst. Treasurer - R. Ramsurrun, Members -- L. Mahabally, H. Routho, J. Sumputh, M. Mogun, P. Makool, G. Bijlall, V. Jaunky, G. Cheetamun

Inter Colleges Quiz

Two students Mooneegan Hans and Dussoye Himeshraj, both of SC took part in an inter college quiz competition held at St Francois Xavier Stadium in May 2015. Students of Loreto College, GMD Atchia, Royal College (PL), Port-Louis North SSS and Muslim Girls took part. Our two representatives won through to achieve the 3rd position among the other participants.

It is a great pride indeed to see students of DAV College shining even at levels where the competition was judged to be very tough with the presence of students of star colleges.

Environment Day

The Environment Club of the college organised a series of cleaning activities, tree planting and distribution of plants to celebrate the World Environment Day on 5th July. The entire college took part in this activity and all were motivated to contribute for a thorough cleaning of the college yard, classes and specialist rooms. A "BEST CLASS" competition was also held to encourage students clean and decorate their classes properly and a certificate was awarded to the classes which were most properly maintained.

Talks on Juvenile Delinquency

The college was visited by officers from the Child Development Unit to talk to our students on Juvenile Delinquency as part of a counselling programme designed to create awareness among our students on the role of the CDU in Mauritius. The students were informed on how to get help from different support centres such as the Rehabilitation Youth Centre and Correctional Youth Centre. Students were also made aware of the types of children who might end up in such centres.

Inter Class Quiz

Several inter-class quiz competitions were organised in the month of June as part of the annual extra-curricular activities of the college to get students involved in education-based activities as well as to commemorate the 50th anniversary of the college.

Student of DAV College gains Outstanding Cambridge Learner Awards

The college is very pleased to have one student, Vimal Seetohul, gaining a High Achievement Certificate in the 2014 HSC/AS Level Cambridge Examinations in German Language. This student deserves to be known by all as he has been one of the most appreciated students at DAV due to his hard work, calm and respectful nature. He is a well known professional piano player with several achievements to his name.

He was offered the Outstanding Cambridge Examinations Award in an award ceremony held at the Mauritius Examination Syndicate on Thursday 11th June 2015, in the presence of The Hon. (Mrs) Leela Devi Dookun Luchoomun, Minister of Education & Human Resources, Tertiary Education & Scientific Research, Mr. Michael O'Sullivan CMG, Chief Executive and Mrs. Jane Henry, Education Manager Sub-Saharan Africa and Indian Ocean, CIE.

Blood Donation at DAV College

The college recently organised a Blood Donation activity which was carried out in collaboration with the Ministry of Health and Quality of life. The activity was carried out in the "multi purpose hall" of Arya Sabha Mauritius where the students of upper classes and all staff of the college and Arya Sabha voluntarily donated their blood. 50 pints of blood were collected.

The aim of this blood donation was to help the ministry of health to replenish its blood bank.

50th Anniversary celebrations of D.A.V College

To mark its 50th anniversary, a whole lot of extra-curricular activities has been organised throughout this year. On the 18th June 2015, the golden jubilee celebration culminated a Prize Giving ceremony remarkably set in the school yard. On the same occasion, a souvenir magazine was launched and a science / art / technical exhibition was inaugurated to commemorate the event. The Minister of Education and Human Resources, Tertiary Education and Scientific Research, Hon. L.D Dookun Luchoomun, the Minister of Environment, National Emergency__ and Beach Authority, Hon. Raj Dayal, His Excellency, Mr. Anoop Kumar Mudgal, High Commissioner of India, The President of Arya Sabha Mauritius, Dr. O.N Gangoo and other eminent personalities graced the function.

It was an excellent platform to listen to the messages of these eminent persons and to celebrate the best students for the year 2014, all spiced up with a well-rounded cultural programme organised by the students and staff of the college.

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ।

पंडिता प्रेमिला सिरतन

हे अग्निस्वरूप प्रभो! मेरी आत्मा आपके लिए ईंधन-रूप है, मुझमें प्रकाशित होकर मेरी आत्मा को प्रेरित कीजिए, जिससे मैं कल्याण मार्ग का पथिक बन सकूँ। हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर मुझे प्रजा अर्थात् आज्ञाकारी पुत्र-पुत्रियों, सेवक-सेविकाओं के द्वारा उन्नत कीजिए। पशुओं के द्वारा आगे बढ़ूँ। समृद्ध बनूँ। मुझे पाँच वरदान चाहिए -- पहला – 'प्रजया इध्यस्व', दूसरा 'पशुभि वर्धस्व', तीसरा 'ब्रह्मचर्येन इद्ध', चौथा 'अन्नाद्येन वर्धय' और पाँचवा - भोग्य पदार्थ।

प्रजापति परमात्मा की उपासना से ये पाँचों वरदान प्राप्त होते हैं। इन्हें प्राप्त करके यजमान अपना जीवन सुखमय बना लेता है।

इस मन्त्र में परमात्मा को 'जातवेद' नाम से सम्बोधित किया गया। 'जातवेद' का अर्थ है -- ज्ञानस्वरूप। परमेश्वर ज्ञान का भण्डार है।

परमात्मा का न आदि है और ना ही अन्त। वह अग्निस्वरूप है, ज्योतिर्मय है। इस मन्त्र में यजमान कहते हैं कि हे परमेश्वर, हमारी आत्मा यज्ञ के लिए ईंधन है। आप हमारी आत्मा को प्रकाशित कीजिए। आप प्रकाश स्वरूप हैं, आपके गुणों को हम धारण करें, ताकि हम ज्ञान, पवित्रता, शांति, प्रेम, आनन्द और शक्ति को पा सकें ।

आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने पर हमें अपने मौलिक स्वरूप का बोध होता है। हमारी आत्मा ईंधन बनकर परमात्मा के सान्निध्य में आती है। तभी हमें परमात्मा का आनन्द प्राप्त होता है। हम इस शरीर को आधार बनाकर आत्मा को सत्य ज्ञान से सुगंधमय बनाते हैं। ब्रह्म विद्या के द्वारा ब्रह्मवर्चस अर्थात् ज्ञान के तेज को पाकर तेजस्वी बनते हैं। इस प्रकार यजमान परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें पाँच वरदान प्राप्त हों।

यजमान को भौतिक सुख भी चाहिए। वह सुख जीवन की उपयोगी वस्तुओं की प्राप्ति करने पर मिलता है। गौ आदि पशुओं से हमें घी, दही, मक्खन आदि खाद्य पदार्थ मिलते हैं। इसलिए इस मन्त्र में इन वस्तुओं के लिए भी प्रार्थना की जा रहा है।

यजमान की एक कामना है कि वह प्रजा का स्वामी बने । 'प्रजा' उत्तम सन्तान को कहते हैं। बच्चे सब के हो सकते हैं, परन्तु अच्छे बच्चे पाने के लिए माता-पिता को अपनी संतानों पर बहुत ध्यान देने की आवश्यकता होती है। जब माँ-बाप बच्चों को संस्कारित करने में पूरा ध्यान देते हैं तब बच्चे प्रजा बनते हैं। प्रजा और सन्तान में भेद है। सन्तान शैतान बन सकती है, परन्तु प्रजा में शैतान के दुर्गुण नहीं होते। प्रजा सुसंतान होती है। सुसंतान के लिए माता-पिता चाहे धन बटोरे या न बटोरे, यदि वह माता-पिता द्वारा संस्कार पा लेती हैं, तो स्वयं अपने लिए बहुत सा धन पैदा कर लेती है।

जो खराब सन्तान होती है, वह माता-पिता द्वारा बटोरे गये धन-वैभव को नष्ट कर देती है। माता-पिता की झोली खाली कर देती है। प्रजा अर्थात् सुसंतान तो माँ-बाप के धन को दस गुना बढ़ा देती है।

प्रजा पाकर माता-पिता भाग्यशाली हो जाते हैं। प्रजा ज्ञानवान्, बुद्धिमान् हुआ करती है। वह चारों तरफ़ शांति का शंखनाद करती है। ऐसी प्रजा पाकर माता-पिता अपने घर-परिवार को शांतिमय बना लेते हैं।

जो बच्चे प्रजा नहीं बनते वे परिवार को परेशान किये बिना नहीं रहते। शुभ कार्यों में विघ्न डालते रहते हैं। वे दूसरों की खुशी को देख नहीं सकते। परिवार के लिए काँटे बनकर पीड़ा देते रहते हैं। अपनी घातक प्रवृत्ति के कारण स्वयं दुखी होते हैं और सबको दुखी करते रहते हैं। प्रजा अर्थात् उत्तम सन्तान अपने गुणों की सुगन्ध से सबको प्रसन्न करती है।

वह चन्दन के पेड़ के समान अपनी सुगन्ध उसको भी देती है, जो उसको कटु शब्दों से घायल करता है। उसमें बदला लेने की भावना नहीं होती। ऐसी ही प्रजा सच्चा यजमान बनकर अपने शुभ कर्मों से सबकी भलाई करती है।

सुसन्तान, स्वर्ग का द्वार खोलती है और कुसन्तान नरक का द्वार खोलती है। कुपुत्र से माता-पिता का सर झुक जाता है, कुप्रजा से राजा का सर झुक जाता है, कुछात्र से गुरु का सर झुक जाता है, कुनारी से पुरुष वर्ग का सर झुक जाता है, इसलिए वेद में कहा गया है कि सुसन्तान के लिए धन-वैभव बटोर कर न रखना चाहिए। उसके दर्शन से पितृऋण, पोते के दर्शन से देवऋण, प्रपौत्र दर्शन से ऋषिऋण होकर स्वर्ग प्राप्त नहीं होता उसके दर्शन से मुक्ति नहीं मिलती, बल्कि धर्मानुसार सत्य ज्ञान, श्रेष्ठ कर्म और समय का सदुपयोग कर श्रेष्ठ चरित्रवान् होने से मुक्ति-जीवनमुक्ति प्राप्त होती है । जंगली-जानवर क्या अपने पुत्र प्रपौत्र के दर्शन कर स्वर्गवासी बनते हैं? तो वेद माता कहती है नहीं। इसलिए यज्ञ करते हुए हम तन-मन-धन सब कुछ अर्पण करते हैं।

मंत्र में **'पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन'** कहा गया है। हमारी इंद्रियाँ भी पशु-समान हैं। बुद्धि को ब्रह्म ज्ञान के तेज से तेजस्वी, स्वस्थ, संयमी और बलवान् बनाना चाहिए जिससे उसके माध्यम से हम उत्तम कर्म कर सकेंगे। उत्तम गुणों से पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ – 'नाक, जीभ, आँख, कान और त्वचा' को शुभ कर्म में लगाना चाहिए। पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं – हाथ, पाँव, मुख, गुदा और उपस्थ। पाँच प्राण हैं - प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान। शरीर की इंद्रियों को अनुशासन में रखकर आत्मा को अपना दर्शन करने का अवसर प्राप्त होता है। अनुपयोगी बातों में संकल्प को विचरण करने नहीं देना है और न ही भविष्य के प्रति डर, भय, चिन्ता करने का मौका देना है। उत्तम गुण सभी को शान्ति, प्रेम, दया, सहानुभूति से कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। आत्मा के वशीभूत इंद्रियाँ किसी को दुख नहीं देती हैं। घृणा, ईर्ष्या, छल, कपट, स्तेय जैसी कुभावनाओं को मनः स्थिति में नहीं टिकाती। इस प्रकार के गुण सभी को सुख देते हैं। **क्रमशः**

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 243-1025, Fax : 243-8576